मङ्गलम्

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः
भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभि-
र्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥1॥

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥2॥

मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः।
मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥3॥

मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तुः नः ॥4॥

भावार्थः

हे देवगण! हम कानों से कल्याणकारी (वचन) सुनें, आँखों से कल्याणकारी (दृश्य) देखें। सभी स्थिर अङ्गों (स्वस्थ इन्द्रियों) से स्तुति करते हुए दिव्य आयु को प्राप्त करें ॥1॥

सुरभित वायु बहे। नदियाँ मधुर जल से युक्त हों। ओषधियाँ हमारे लिए मधुमय हों ॥2॥

रात्रियाँ मधुमय हों। प्रातः काल मधुर (सुप्रभात) हो। पृथिवी की धूल भी मधुमय अर्थात् मधुर अन्नप्रदायिनी हो। द्युलोक (नक्षत्रलोक) प्रकाशमय हो। परमेश्वर हमारे लिए कल्याणकारी हों ॥3॥

वनस्पतियाँ हमारे लिए मधुर होवें, सूर्य मधुर (अन्नादि देने वाले) होवें। गायें हमें मधुर (दूध देने वाली) हों ॥4॥